CHAPTER 2, जूझ

PAGE 34, अभ्यास

'जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

उत्तर: 'जूझ 'पाठ का शीर्षक वास्तव में नायक के संघर्ष को चित्रित करता है। शीर्षक में नायक आनंद के संघर्ष की कहानी का मुख्य बिंदु है। कि कैसे आनंद स्कूल तक जाने के लिए संघर्ष करता है। शीर्षक पढ़कर आपको अंदाजा हो जाता है कि कहानी किस दिशा में जाएगी। कहानी पढ़ने के बाद शीर्षक उचित लगता है। नायक गाँव में रहता है। एक किसान परिवार की सोच और मान्यता इस कहानी में दर्शायी गयी है कहानी का नायक अध्ययन करना चाहता है। उनके पिता शिक्षा के महत्व से अनभिज्ञ हैं। पिता के अनुसार, किसान को केवल कृषि की गतिविधियों से ही आजीविका मिलती है। इसलिए, वह शिक्षा को महत्व नहीं देते है। शीर्षक अनुसार कैसे नायक पाठशाला जाने के लिए संघर्ष करता है वह बस्ता ले कर ही पहले खेतो में सिंचाई करता है पिता के शर्तानुसार पहले

कृषिकार्य करता है फिर पढ़ने जाता है। वह शिक्षा में मिलने वाले अवसर का पूरा फायदा उठाता है। उसका संघर्ष जल्द ही उसे अपने लक्ष्य तक ले जाता है। कहानी का केंद्र बिंदु नायक का पढ़ने के प्रति संघर्ष है। जहां वह परिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, व्यक्तिगत स्तर पर खुद के लिए लड़ता है और सफल होता दिखता है।

12:1:2:अभ्यास:2

स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

उत्तर: लेखक स्कूल में मराठी शिक्षक सौंदलगेकर के संपर्क में आता है। सौंदलगेकर एक अच्छे कवि और रसिक व्यक्ति थे। कविता पाठ करने के उनके तरीके ने लेखक को प्रभावित किया। लय,छंद-गति,आरोह-अवरोह का सही से ज्ञान कराते थे।लेखक उनसे बहुत प्रभावित है। पहले तो वह तुकबंदी करता है, लेकिन अभ्यास से वह खुद एक अच्छा कवि बन जाता है। शुरुआत में, सौंदलगेकर उसकी प्रतिभा को बेहतर बनाने में उनकी मदद करते हैं वह नायक को उस समय के कवियों के बारे में बताते है। इसके कारण लेखक के मन में कवियों के

प्रति शंका समाप्त हो जाती है और उसका आत्मविश्वास बढ़ जाता है। वह आस पास के दृश्यो पर कविता रचना शुरू कर देता है।

12:1:2:अभ्यास:3

श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई।

उत्तर: मास्टर सौन्दलगेकर एक कुशल शिक्षक, विद्वान और कवि थे। वह मराठी के बहुत बड़े ज्ञाता थे। वे सुसंगठित और सुरीले तरीके से दूसरों के द्वारा लिखी गई धुन और कविताएँ गाते थे। पुरानी और नई मराठी कविताओं के अलावा, उन्हें कई अंग्रेजी कविताएँ भी याद थीं। वह पहले कुछ कविताएँ गाते थे और फिर बैठ जाते और अभिनय के साथ कविता का भाव बताते थे। आनंद को कविता लिखने के शुरुआती चरणों में, उन्होंने उसका मार्गदर्शन किया और सुधार किया। आनंद का आत्मविश्वास बढ़ाया जिससे आनंद धीरे-धीरे कविताएँ लिखने में कुशल हो गया और बाद में प्रतिष्ठित कवि बन गया ।

12:1:2:अभ्यास:4

कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारण में क्या बदलाव आया?

उत्तर: कविता से लगाव से पहले लेखक को खेतो में काम करते समय बहुत अकेलापन महसूस होता। लेकिन कविता के प्रति लगाव के बाद, वह जब खेतों में काम करता , भैंसों के चराने ले जाता तो अपनी कविताओं में खोया रहता। समय के साथ खुद से ही तुकबंदी करने लगा। अब वही अकेलापन उसे अच्छा लगने लगा अब वह अकेले अपनी कविताओं को गाता था, अभिनय करता और नृत्य करता रहता था।

12:1:2:अभ्यास:5

आपके ख्याल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? तर्क सहित उत्तरे दें।

उत्तर: इस पाठ के सन्दर्भ में हम अगर लेखक के पिता जी और दत्ता जी राव का रवैया अगर पढ़ाई - लिखाई के संदर्व में देखे तो पता चलता है कि दत्ता जी राव का रवैया लेखक के पिता जी से बेहतर था। वह पढ़ाई - लिखाई के महत्व को भली-भाँती जानते थे इसलिए जब दत्ता जी को पता चला की लेखक के पिता उसे पढ़ने के लिए पाठशाला नहीं जाने देते तो उन्होंने लेखक के पिता को बहुत भला - बुरा सुनाया और कहा की बेटे और पत्नी को खेतो के काम में लगा कर तू पूरा दिन क्या करता है। तू कल से बेटे को पढ़ने भेजेगा अगर तेरे पास फीस के पैसे नहीं है तो मैं उसकी फ़ीस दूंगा। दत्ता जी के सामने लेखक के पिता ने 'हाँ ' तो कर दी पर बाद में वे आनंद को स्कूल भेजने के पक्ष में नहीं थे। जिससे ज्ञात होता है की पिता जी का रवैया पढ़ाई - लिखाई के प्रति ठीक नहीं था।

12:1:2:अभ्यास:6

दत्ता जी राव से पिता का दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि झूठ का सहारा न लेना पड़ता तो आगे का घटनाक्रम क्या होता?

अनुमान **लगाएँ।**

उत्तर: दत्ता जी राव से पिता पर दबाव बनाने के लिए लेखक और उनकी माँ को झूठ का सहारा लेना पड़ा। उन्हों ने पिता जी से कहा की दत्ता जी ने आप को बुला कर मुझे स्कूल भेजने के लिए कहा है। पिता जी दत्ता जी का नाम सुन कर उनसे मिलने चले गए। अगर नहीं जाते और उन्हें झूठ का पता चल जाता तो वो माँ - बेटे की पिटाई कर देते और उन्हें कृषिकार्य में पूरी तरह झोंक देते।